रविवार 16 अगस्त, 2020

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: **भजन संहिता** 23 : 1, 3

"यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।वह मेरे जी में जी ले आता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 25 : 1, 2
भजन संहिता 27 : 1, 3-5, 11, 14

1 हेय होवा मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता हूं।
2 हे मेरे परमेश्वर, मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है।
1 यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?
3 चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूंगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे निशचिंत रहूंगा॥
4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं॥
5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।
11 हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर, और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल।
14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

पाठ उपदेश

बाइबल

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1. भजन संहिता 42 : 1, 2, 4, 8, 11

1 जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हांफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हांफता हूं।
2 जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा?
4 मैं भीड़ के संग जाया करता था, मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करने वाली भीड़ के बीच में परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है।
8 तौभी दिन को यहोवा अपनी शक्ति और करूणा प्रगट करेगा; और रात को भी मैं उसका गीत गाऊंगा, और अपने जीवन दाता ईश्वर से प्रार्थना करूंगा॥
11 हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा॥

2. यशायाह 11 : 1-3, 5, 6, 9, 10, 16

1 तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी।
2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी।
3 ओर उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा॥ वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा;
5 उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी॥
6 तब भेडिय़ा भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा।
9 मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दु:ख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है॥
10 उस समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के लिये एक झण्ड़ा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगें, और उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा॥
16 और उसकी प्रजा के बचे हुओं के लिये अश्शूर से एक ऐसा राज-मार्ग होगा जैसा मिस्र देश से चले आने के समय इस्राएल के लिये हुआ था॥

3. मरकुस 1 : 1

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।

4. मत्ती 4 : 23-25

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।
24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।
25 और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली॥

5. मत्ती 8 : 2, 3, 5-10, 13-16

2 और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा; कि हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा और वह तुरन्त को ढ़ से शुद्ध हो गया।
5 और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।
7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है।
10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥
14 और यीशु ने पतरस के घर में आकर उस की सास को ज्वर में पड़ी देखा।
15 उस ने उसका हाथ छूआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उस की सेवा करने लगी।
16 जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्माएं थीं और उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।

6. लूका 11 : 1, 2 (*से 1st* ,)

1 फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था: और जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उस
से कहा; हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे।
2 उस ने उन से कहा।

7. मत्ती 6 : 5 (कब)-13

5 …जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और
सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे
अपना प्रतिफल पा चुके।
6 परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है
प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
7 प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं बक बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से
उन की सुनी जाएगी।
8 सो तुम उन की नाईं न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या
क्या आवश्यक्ता है।
9 सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
12 और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।”
आमीन।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 595 : 1-2

रवि। आत्मा पर शासन करने वाले का प्रतीक, सत्य, जीवन और प्रेम का प्रतीक।

2. 310 : 11-18, 31-2

दिन समाप्त हो सकता है और छाया प्रबल हो सकती है, लेकिन अंधेरा गायब हो जाता है जब पृथ्वी फिर से अपनी धुरी पर आ गई है। सूर्य पृथ्वी की क्रांति से प्रभावित नहीं है। इसलिए विज्ञान आत्मा को ईश्वर के रूप में प्रकट करता है, पाप और मृत्यु से अछूता, — केंद्रीय जीवन और बुद्धिमत्ता के रूप में जिसके चारों ओर मन की प्रणालियों में सामंजस्यपूर्ण रूप से सभी चीजें हैं।

आत्मा नहीं बदलती।

आत्मा में न तो वृद्धि, परिपक्वता है, न ही क्षय है। ये परिवर्तन भौतिक अर्थों के संशोधन हैं, नश्वर विश्वास के अलग-अलग बादल हैं, जो होने की सच्चाई को छिपाते हैं।

3. 273 : 16-20

सामग्री और चिकित्सा विज्ञान के तथाकथित कानूनों ने नश्वर को कभी भी पूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और अमर नहीं बनाया है। आत्मा द्वारा शासित होने पर मनुष्य सामंजस्यपूर्ण होता है। इसलिए होने के सत्य को समझने का महत्व, जो आध्यात्मिक अस्तित्व के नियमों को प्रकट करता है।

4. 209 : 5-8

मन, अपने सभी स्वरूपों पर सर्वोच्च और उन सभी पर शासन करने वाला, विचारों की अपनी प्रणाली, अपने सभी विशाल निर्माण का जीवन और प्रकाश का केंद्रीय सूर्य है; और मनुष्य दिव्य मन के लिए सहायक है।

5. 162 : 12-19

अनुभवों ने इस तथ्य का पक्ष लिया है कि मन शरीर को नियंत्रित करता है, एक उदाहरण में नहीं, बल्कि हर उदाहरण में। आत्मा के अविनाशी संकाय पदार्थ की स्थितियों के बिना और तथाकथित भौतिक अस्तित्व की झूठी मान्यताओं के बिना भी मौजूद हैं। व्यवहार में विज्ञान के नियमों को पूरा करके, लेखक ने अपने गंभीर रूपों में तीव्र और पुरानी बीमारी दोनों के मामलों में स्वास्थ्य को बहाल किया है।

6. 422: 22-32 (*से 2nd.*)

आइए हम हड्डी-रोग के दो समानांतर मामलों को मान लें, दोनों समान रूप से उत्पन्न होते हैं और समान लक्षणों में शामिल होते हैं। एक सर्जन एक मामले में कार्यरत है, और दूसरे में एक क्रिश्चियन वैज्ञानिक। सर्जन, उस

मामले को पकड़कर अपनी स्थिति बनाता है और उन्हें कुछ बिंदुओं पर घातक रूप से प्रस्तुत करता है, चोट के अंतिम परिणाम के रूप में भय और संदेह का मनोरंजन करता है। सरकार की बागडोर अपने हाथों में न रखते हुए, उनका मानना है कि मन से मजबूत कोई चीज - अर्थात्, सामग्री - बीमारी को नियंत्रित करती है। इसलिए उसका उपचार अस्थायी है। यह मानसिक स्थिति हार को आमंत्रित करती है।

7. 423 : 8-26

क्रिश्चियन वैज्ञानिक, वैज्ञानिक रूप से यह समझते हुए कि सभी मन है, मानसिक कारण के साथ शुरू होता है, त्रुटि होने का सत्य है। यह सुधारात्मक एक विकल्प है, जो मानव प्रणाली के हर हिस्से तक पहुंचता है। पवित्रशास्त्र के अनुसार, यह "जोड़ों और मज्जा" तक पहुंचता है, और यह मनुष्य के सद्भाव को पुनर्स्थापित करता है।

पदार्थ-चिकित्सक, उसकी शत्रुता और उसके उपाय दोनों के रूप में बात करता है। वह इस बीमारी को उन सबूतों के अनुसार कमजोर या मजबूत करता है जो मामले में प्रस्तुत होते हैं। तत्वमीमांसा, चाहे वह काम के आधार को अपना मामला क्यों न बनाता हो और त्रुटि और कलह से श्रेष्ठ होने के सत्य और सद्भाव के संबंध में, बीमारी से निपटने के लिए खुद को कमजोर के बजाय मजबूत बना लेता है; और वह आनुपातिक रूप से अपने रोगी को साहस और जागरूक शक्ति की उत्तेजना के साथ मजबूत करता है। विज्ञान और चेतना दोनों अब मन के कानून के अनुसार होने की अर्थव्यवस्था में काम कर रहे हैं, जो अंततः अपने पूर्ण वर्चस्व का दावा करता है।

8. 494 : 10-19, 30-2

ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है। यीशु ने शारीरिक शक्ति के साथ-साथ आत्मा की असीम क्षमता की अक्षमता का प्रदर्शन किया, इस प्रकार मानव भावना को अपने स्वयं के दोषों से भागने में मदद करने और दिव्य विज्ञान में सुरक्षा की तलाश करने के लिए।

हमारे मास्टर ने शैतानों (बुराइयों) को बाहर निकाल दिया और बीमारों को चंगा किया। उनके अनुयायियों के बारे में यह भी कहा जाना चाहिए, कि वे भय और सभी बुराईयों को अपने और दूसरों से दूर करते हैं और बीमारों को ठीक करते हैं। जब भी मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित होगा, ईश्वर मनुष्य के माध्यम से बीमारों को चंगा करेगा।

9. 14 : 9-24

"प्रभु के साथ" होना ईश्वर के कानून का पालन करना है, परमात्मा द्वारा पूर्ण रूप से शासित होना, - आत्मा द्वारा, पदार्थ द्वारा नहीं।

एक क्षण के लिए सचेत हो जाएं कि जीवन और बुद्धि विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक है, - न तो भौतिक में और न ही भौतिक के साथ, - और शरीर तब कोई शिकायत नहीं करेगा। यदि बीमारी में विश्वास से पीड़ित हैं, तो अचानक आप खुद को स्वस्थ पाएंगे। शरीर को आध्यात्मिक जीवन, सत्य और प्रेम द्वारा नियंत्रित किए जाने पर दु: ख को आनंद में बदल दिया जाता है। इसलिए यीशु की प्रतिज्ञा की आशा पूरी हुई: "जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा ... क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं," — [क्योंकि अहंकार शरीर से अनुपस्थित है, और सत्य और प्रेम के साथ मौजूद है।] प्रभु की प्रार्थना आत्मा की प्रार्थना है, भौतिक अर्थ की नहीं।

10. 16 : 20-15

जैसे ही हम सभी भौतिक संवेदना और पाप से ऊपर उठते हैं, क्या हम स्वर्ग में जन्मी आकांक्षा और आध्यात्मिक चेतना तक पहुंच सकते हैं, जो कि प्रभु की प्रार्थना में इंगित किया गया है और जो तुरंत बीमार को ठीक करता है।

यहाँ मुझे यह बताने दें कि मैं प्रभु की प्रार्थना का आध्यात्मिक अर्थ क्या समझता हूँ:

हमारे परमपिता जो स्वर्ग में विराजते हैं,

हमारे पिता-माता भगवान, सभी सामंजस्यपूर्ण,

पवित्र हो तेरा नाम।

मनमोहक

तुम्हारा राज्य आओ।
तेरा राज्य आ गया; तू हमेशा मौजूद है।

तुम्हारी इच्छा पृथ्वी में हो, जैसा कि स्वर्ग में है।

जैसा कि स्वर्ग में पृथ्वी पर भी है, हमें यह जानने में सक्षम करें, कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वोच्च है।

हमें इस दिन की हमारी रोटी दो;

आज के लिए हमें अनुग्रह दें; कृपया प्रसिद्द स्नेह खिलाएँ;

और हमें हमारे कर्ज माफ कर दो, क्योंकि हम अपने कर्जदारों को माफ करते हैं।
और प्यार प्यार में परिलक्षित होता है;

और हमें प्रलोभन में न ले जाएँ, बल्कि हमें बुराई से बचाएं;

और परमेश्वर हमें प्रलोभन में नहीं ले जाता है, बल्कि हमें पाप, बीमारी और मृत्यु से बचाता है।

क्योंकि राज्य, शक्ति और महिमा सदा के लिए तुम्हारी है।

क्योंकि परमेश्वर अनंत है, सर्व-शक्ति है, सभी जीवन, सत्य, प्रेम, सभी पर शासक है, और सभी में है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6